तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कै... सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २७ अंक : ८ नवम्बर : २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 2261001 (U.P.)
Ph: 242017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 242790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 22201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - ८, नवम्बर , २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@vsnl.net

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	आचार्य हरिभद्रकृत श्रावकधर्म-विधिप्रकरण (एक परिचय)	डॉ. सागरमल जैन	४३१
२.	भगवान् महावीर और औषध विज्ञान	मुनि दर्शन विजयजी	४३९
३.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्रीसुयश मुनिजी	४४८
४.	श्रीचन्दराज चरित्र		४५०
५.	संकलन	भूरचन्द जैन	४६७

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

आचार्य हरिभद्रकृत श्रावकधर्म विधिप्रकरणः एक परिचय

(सम्यक्त्व के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. सागरमल जैन

आचार्य हरिभद्र ने श्रावक शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ को स्पष्ट करते हुए जिनवाणी का श्रवण करने वाले को श्रावक कहा है, किन्तु यही पर्याप्त नहीं है, उनकी दृष्टि में श्रावक होने के लिए कुछ योग्यताएँ भी अपेक्षित हैं। उन्होंने इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जो श्रावक धर्म का अधिकारी है अर्थात् श्रावक होने की पात्रता रखता है उसके द्वारा ही श्रावक धर्म का आचरण सम्भव है। अनाधिकारी या अपात्र व्यक्ति द्वारा किया गया श्रावक धर्म का परिपालन भी जिनेश्वर देव की आज्ञाभंग के दोष से दूषित होने के कारण अधर्म ही बन जाता है। आचार्य हरिभद्र की दृष्टि में श्रावक धर्म का अधिकारी या पात्र वही व्यक्ति हो सकता है, जो दूसरों से भयभीत नहीं होता है, क्योंकि धार्मिक चेतना का विकास निर्भय मानसिकता में ही सम्भव है। पुनः आचार्य कहते हैं कि श्रावक धर्म का पालन कोई भी व्यक्ति अपनी कुल परम्परा से प्राप्त शुद्ध आजीविका का अर्जन करते हुए कर सकता है। श्रावक धर्म के लक्षणों की चर्चा करते हुए वे यह बताते हैं कि धर्म के प्रति प्रीति रखना, न तो किसी की निन्दा करना और न निन्दा सुनना, अपितु निन्दकों पर भी करुणा रखना श्रावक धर्म की आराधना के लिए आवश्यक है। हरिभद्र की दृष्टि में जिज्ञासुवृत्ति और चित्त की एकाग्रता भी धर्म-साधना के अन्य मुख्य अंग हैं। इसी प्रकार नियत समय पर चैत्यवन्दन (देव-वन्दन), गुरु का विनय, उचित आसन पर बैठकर धर्म श्रवण, स्वाध्याय में सतत् उपयोग–ये सभी कार्य श्रावक धर्म के आचरण के लिए आवश्यक हैं। आगे आचार्य हरिभद्र श्रावक-आचार की विशिष्टता बताते हुए कहते हैं कि अपने सदाचरण से सभी का प्रिय होना, अनिन्दित कर्म से आजीविका उपार्जन करना, आपत्ति में धैर्य रखना, यथाशक्ति तप,

त्याग और धर्म का आचरण करना यही श्रावक के मुख्य लक्षण हैं। उपर्युक्त गुणों से युक्त होकर के ही गृहस्थ धर्म का परिपालन सम्भव होता है, इन गुणों के अभाव में जिन-आज्ञा की विराधना होती है और श्रावक धर्म के परिपालन की पात्रता ही समाप्त हो जाती है।

गृहस्थधर्म के अधिकारी के लक्षणों की चर्चा के उपरान्त आचार्य हरिभद्र ने प्रस्तुत कृति में इस बात पर अधिक बल दिया कि पञ्च अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत रूपी श्रावक धर्म का मूल आधार सम्यक्त्व है। प्रस्तुत कृति में आचार्य ने सम्यक्त्व के सन्दर्भ में विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की है। सर्वप्रथम उन्होंने सम्यक्त्व के क्षायिक, औपशमिक और क्षायोपशमिक—ऐसे तीन प्रकारों की चर्चा की है। इसी प्रसंग में उन्होंने यह भी बताया है कि जो न स्वयं मिथ्यात्व का सेवन अनुमोदन करता है और न करवाता है और न करने वाले का अनुमोदन करता है वही सम्यक्त्व का अधिकारी होता है। मिथ्यात्व के अनेक रूपों की चर्चा करते हुए आचार्य ने सर्वप्रथम मुक्ति के निमित्त सरागी लौकिक देवताओं की उपासना को मिथ्यात्व प्रतिपादित किया है। इन लौकिक देवों की पुष्पमाला आदि से पूजा करना, वस्त्रादि से उनका सत्कार करना तथा मानसिक रूप से उनके प्रति प्रीति भाव रखना—हरिभद्र की दृष्टि में ये सभी मिथ्यात्व के लक्षण हैं। इसी प्रकार उन्होंने वीतराग लोकोत्तमदेव के लक्षण को लौकिक देवों पर घटित करना भी मिथ्यात्व माना है। उनकी दृष्टि में शुद्ध धर्माचरण से विमुख तापस, शाक्यपुत्रीयश्रमण आदि अन्य तैर्थिकों से संसर्ग रखना, उनकी प्रशंसा करना और उनके आदेशों का पालन करना भी मिथ्यात्व के लक्षण हैं। मात्र यही नहीं आचार्य ने स्पष्ट रूप से जैनमुनि के वेश को धारण करने वाले, किन्तु जिन-आज्ञा का सम्यक् रूप से पालन नहीं करने वाले पार्श्वस्थ आदि जैनाभासों के वन्दन, पूजन को भी मिथ्यात्व ही माना है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने शिथिलाचारी, खिन्न मन से मुनि जीवन जीने वाले, आचारहीन, नित्य एक स्थान पर रहने वाले, निमित्त आदि विद्याओं के द्वारा लोकरंजन करने वाले, स्वेच्छाचारी जैन श्रमणों को भी वन्दनीय नहीं माना है। उनकी दृष्टि में ऐसे-ऐसे जैनश्रवणों के वन्दन आदि से भी मिथ्यात्व की

ही अभिवृद्धि होती है। आचार्य के अनुसार ऐसे साधुओं का संसर्ग भी सम्यक्त्व का नाशक माना गया है। इसी क्रम में स्वेच्छाचारी को परिभाषित करते हुए उन्होंने बताया है कि जो आगम विरुद्ध आचरण करता है और जिन वचनों की आगम विरुद्ध मनमाने ढंग से व्याख्याएँ करता है, वह स्वेच्छाचारी है। साथ ही ऐसा तथाकथित श्रमण जो ऋद्धि-गौरव, सुख-गौरव और रस-गौरव में डूबा रहता है, मात्र यही नहीं जो चैत्यादि के निर्माण में और उनके निमित्त से धन-धान्य की वृद्धि करने हेतु कुँआ, बगीचा आदि बनवाने में प्रवृत्त रहता है तथा श्रावकों पर मनमाने ढंग से कर आदि लगाकर सम्पत्ति एकत्र करता है, जिन आज्ञा का विराधक स्वेच्छाकारी श्रमण है। इस प्रकार आगम विरुद्ध आचरण करने वाले, जिन-वचन को मनमाने ढंग से अन्यथा करने वाले स्वच्छन्द मुनियों के उपाश्रय आदि में जाकर धर्म श्रवण आदि क्रियाएँ भी हरिभद्र की दृष्टि में मिथ्यात्व का ही कारण है। श्रद्धावान् श्रावक ऐसे स्वेच्छाकारी मुनियों के सम्पर्क में आकर निश्चित ही अपने सम्यक्त्व को दूषित करता है, क्योंकि सुविहितों और स्वेच्छाचारियों के उपदेशों में विसंवाद होने के कारण उसके मन में सन्देह उत्पन्न होता है । प्रस्तुत कृति में आचार्य हरिभद्र तो यहाँ तक कहते हैं कि ऐसे स्वेच्छाकारी मुनियों के चैत्य, उपाश्रय आदि स्थान भी मिथ्यात्व का जनक जानकर त्याग करना चाहिए। इस प्रकार हम् देखते है कि आचार्य हरिभद्र ने न केवल छद्मवेशी अन्य मतावलम्बी तापसों आदि के सम्पर्क, सत्कार, स्तुति आदि को मिथ्यात्व का कारण माना, अपितु उन जैन मुनियों, जो आगम विरुद्ध आचरण करते हैं, के सम्पर्क, सत्कार, सम्मान आदि को भी मिथ्यात्व का कारण माना है और सद्गृहस्थ को उनसे दूर का ही निर्देश दिया है।

आचार्य हरिभद्र श्रावक धर्म के आधारभूत तत्त्व सम्यक्दर्शन की इस व्याख्या के प्रसंग में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यदि स्वयं इन शिथिलाचारियों के उपदेश का प्रतिषेध करने में असमर्थ हो तो, उनके उपदेश सुनने की अपेक्षा अपने कानों को बन्द कर लेना ही अच्छा है। इस प्रकार उन्होंने गृहस्थसाधकों को स्पष्ट रूप से यह निर्देश दिया है कि मनसा, वाचा और

कर्मणा न तो मिथ्यात्व का सेवन करें, न करायें और न मिथ्यात्व का सेवन करने वाले का अनुमोदन करें। आचार्य अनुमोदन की सूक्ष्मता से चर्चा करते हुए यहाँ तक कहते हैं कि मिथ्यादृष्टियों के मध्य में निवास करना, उनके साथ खान-पान करना और उनके विचारों का प्रतिश्रवण करना भी उस विशिष्ट स्थिति में मिथ्यात्व का अनुमोदन हो जाता है, जब उससे सम्यक्त्व के दूषित होने की सम्भावना हो, यद्यपि इस चर्चा के प्रसंग में हरिभद्र यह अवश्य स्वीकार करते हैं कि मात्र साथ रहने अथवा खान-पान आदि साथ-साथ करने से मिथ्यात्व का अनुमोदन नहीं हो जाता हैं। आचार्य की दृष्टि में इन परिस्थितियों में मिथ्यात्व का अनुमोदन तभी होता हैं, जब व्यक्ति स्वयं उनमें सम्मिलित होकर उन्हें अच्छा समझने लगता है। मात्र परस्पर एक दूसरे के साथ रहने आदि से ही किसी व्यक्ति को एक दूसरे का समर्थक नहीं माना जा सकता है। नगर में राजा, अमात्य, श्रेष्ठी, कलाजीवी, वणिक, मालाकार, स्वर्णकार एवं सेवकजन सब साथ-साथ रहते हैं, फिर भी उन्हें एक दूसरे का समर्थक नहीं कहा जाता है। वस्तुतः संवास या परस्पर भोग-उपभोग मात्र से अनुमति सम्भव नहीं है। आचार्य तर्क देते हैं कि यदि यह हो तो फिर सम्यक्त्व में भी उन सबकी अनुमति माननी होगी। पुनः ऐसी स्थिति में अभव्य जनों का भी सम्यक्त्व में अनुमोदन मानना होगा, जिसे जैन परम्परा स्वयं स्वीकार नहीं करती है। अन्त में आचार्य हरिभद्र कहते है कि सम्यक्त्व के साधक श्रावक को मिथ्यात्व से विरत होकर गुरु के समीप जाकर वीतराग अरहन्त परमात्मा मेरे देव अर्थात् आराध्य हैं, अहिंसा आदि पाँच महाव्रतों का परिपालन करने वाले साधु ही मेरे गुरु हैं और अहिंसा ही धर्म है ऐसी प्रतिपत्ति स्वीकार करनी चाहिए। सम्यक्त्व की चर्चा के प्रसंग में आचार्य हरिभद्र ने आठ दर्शनाचारों का उल्लेख किया है और उनकी विस्तृत विवेचना भी की है। इस प्रसंग में उन्होंने जैनधर्म दर्शन की अनेक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक समस्याओं को उठाया भी हैं। निश्शंकितत्त्व की चर्चा करते हुए पूर्व पक्ष के रूप में वे प्रश्न उठाते हैं कि जीवों में उपयोग लक्षण समान हैं, तो फिर एक को भव्य और दूसरे को अभव्य कैसे माना जा सकता है? अथवा एक परमाणु-पूरित प्रदेश

(क्षेत्र) में दूसरे परमाणु अवगाहन कैसे कर सकते हैं और उसी प्रदेश में सर्वव्यापी होकर कैसे रहते हैं? क्योंकि परमाणु से सूक्ष्म तो कुछ तो ही नहीं है और प्रत्येक परमाणु एक आकाश प्रदेश का अवगाहन करके रहता है, अतः एक ही आकाश प्रदेश में अनेक परमाणु सर्वव्यापी हो कैसे रह सकते हैं? हरिभद्र की दृष्टि में ये एक देश विषयंक अर्थात् आंशिक शंकाए हैं। इसी क्रम में गणिपिटक (जैन आगम) सामान्य पुरुषों द्वारा रचित है अथवा सर्वज्ञ द्वारा ऐसी शंका करना सर्वविषयक सर्वांश शंका है, क्योंकि इससे सम्यक्त्व का आधार ही समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार निराकांक्षा की चर्चा करते हुए बताया गया है कि कर्मों का फल मिलेगा या नहीं इस प्रकार का विचार करना आकांक्षा है। इसी प्रसंग में आचार्य ने यह भी कहा है, स्वधर्म का त्याग कर दूसरे धर्म-दर्शनों की इच्छा करना भी आकांक्षा का ही रूप है। किसी अन्य धर्म विशेष की आकांक्षा करना एक देश अर्थात् आंशिक आकांक्षा है। इससे भिन्न सभी मतों की आकांक्षा करना या यह मानना कि वे सभी धर्म या दर्शन मोक्ष की ओर ही ले जाते हैं, सर्वविषयक आकांक्षा है। यहाँ आचार्य ने शंका के प्रसंग में पेयपाई और आकांक्षा के प्रसंग में राजा और आमात्य की कथा का निर्देश दिया है। प्रस्तुत कृति में हमें कहीं भी ऐसे संकेत उपलब्ध नहीं होते हैं, जिससे हम यह कथा क्या है, इसका विवेचन कर सकें।

इसी क्रम में निर्विचिकित्सा अंग की चर्चा करते हुए कहा गया है कि विचिकित्सा अर्थात् घृणा भी दो प्रकार की मानी गयी है एकांश विषयक और दूसरी सर्व विषयक। विचिकित्सा को स्पष्ट करते हुए आचार्य ने कहा है कि चैत्यवन्दन, व्रतपालन आदि अनुष्ठान सफल होंगे या निष्फल होंगे या निष्फल होंगे या निष्फल होंगे अथवा इनका फल मिलेगा या नहीं? ऐसे कुशंका को विचिकित्सा कहा जाता है। किन्तु सामान्यतया विचिकित्सा का तात्पर्य जैन साधु के मलिन शरीर या वस्त्रादि को देखकर घृणा करना माना जाता है। पूर्व में स्वयं आचार्य हरिभद्र ने इसी अर्थ का निर्देश किया है, किन्तु प्रस्तुत प्रसंग में उन्होंने विचिकित्सा का एक नया अर्थ किया है। विचिकित्सा के सन्दर्भ में आचार्य ने श्रद्धाहीन श्रावक और विद्या की साधना

करने वाले श्रद्धावान् चोर का उदाहरण तथा प्रत्यन्तवासी अर्थात् सीमान्त प्रदेशवासी श्रावक पुत्री की कथा का निर्देश भी किया है।

अमूढ़दृष्टि दर्शनाचार का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने बताया है कि बौद्ध आदि इतर धर्मावलम्बियों की विभिन्न प्रकार की साधना विधियों के प्रति आकर्षित एवं उनके पूजा, सत्कार आदि को देखकर भ्रान्त न होना ही अमूढ़दृष्टि है। विशिष्ट तप करने वाले, वृद्ध, ग्लान, रोगी शैक्ष आदि की सेवा शुश्रुषा करने वाले विनयवान् एवं स्वाध्यायी मुनियों की प्रशंसा करना उपब्रहन हैं। इसी प्रकार धर्म मार्ग से च्युत होते हुए व्यक्तियों को पुनः धर्म मार्ग में स्थिर करना स्थिरीकरण है। वस्तुतः यह धर्म साधना के क्षेत्र में खिन्न हुए व्यक्तियों को प्रोत्साहित कर उन्हें साधना में प्रतिष्ठित करना है। स्वधर्मीवात्सल्य को स्पष्ट करते हुए आचार्य हरिभद्र कहते हैं कि स्वधर्मी जनों के प्रति वात्सल्य या अनुराग रखना, कष्ट के समय उनकी सहायता करना स्वधर्मीवात्सल्य है। आचार्य ने अमूढ़दृष्टि के प्रसंग में सुलसा श्राविका की, उपबृहन के सन्दर्भ में राजा श्रेणिक की, स्थिरीकरणी के प्रसंग में आषाढ़ाचार्य की और वात्सल्य के प्रसंग में वज्रस्वामी की कथाओं का निर्देश किया है।

अन्तिम प्रभावना अंग की चर्चा करते हुए वे कहते है कि विभिन्न प्रकार की लब्धियों (ऋद्धियों, विविध प्रकार की विधाओं, तन्त्र-मन्त्र आदि), अष्टांगज्योतिष, निमित्तशास्त्र आदि में पारंगत होकर उनके माध्यम से जिनशासन की प्रभावना करना सम्यक्-दर्शन का प्रभावना अंग है।

आचार्य ने यहाँ यह भी बताया है कि सम्यक्त्व का बोध होने पर भी व्रत प्रतिपत्ति अर्थात् अणुव्रतों आदि को ग्रहण करने की भावना वैकल्पिक हो सकती है, किन्तु ऐसे व्यक्ति को भी सेवा एवं स्वाध्याय आदि तो नियम से करना ही चाहिए। आचार्य यह भी मानते हैं कि एक बार सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाने पर संसार समुद्र को पार करने के लिए नौका के समान व्रत आदि भी प्राप्ति हो जाने पर संसार समुद्र को पार करने के लिए नौका के समान व्रत आदि भी कालान्तर में अवश्य ही प्राप्त होते हैं। सम्यक्त्व की चर्चा के उपरान्त प्रस्तुत कृति में पाँच अणुव्रतों, तीन गुणव्रतों और चार

शिक्षाव्रतों की चर्चा की गई है। इस सन्दर्भ में आचार्य हरिभद्र ने तत्त्वार्थसूत्र का अनुसरण न करके उपासकदशा के क्रम का अनुकरण किया है। मात्र अन्तर यह है कि जहाँ उपासकदशा में अणुव्रत एवं शिक्षाव्रत ऐसा द्विविध वर्गीकरण है, वहाँ आचार्य हरिभद्र ने कालान्तर में विकसित अणुव्रत, गुणव्रत एवं शिक्षाव्रत ऐसा त्रिविध वर्गीकरण किया है। श्रावक के व्रतों की इस चर्चा के प्रसंग में प्रस्तुत कृति में हरिभद्र ने श्रावक को किस व्रत का परिपालन कितने योगों और कितने करणों से करना होता है, इसकी विस्तृत चर्चा की है। आचार्य हरिभद्र ने करण और योग के सन्दर्भ में कुल भंगों की संख्या ४९ मानी है और उनको भी अतीत, अनागत और वर्तमान के साथ गुणित करने पर कुल १४७ भंग माने हैं। साथ ही यह भी बताया है कि भरतक्षेत्र के मध्यखण्ड के बाहर अनुमति निषेध के तीन भंग कम करने पर स्वयं के विषय में १४४ भंग होते हैं। यहाँ यह भी चर्चा की गई है कि भरतक्षेत्र के बाहर श्रावकों के भी सर्वव्रत साधु के समान ही तीनकरण और तीनयोग से ही होते हैं। ज्ञातव्य है कि योग (साधन) तीन हैं — १. मन, २. वचन और ३. काया, ४. मन और वचन, ५. मन और काया, ६. वचन और काया तथा ७. करना, कराना एवं अनुमोदन करना। इस प्रकार सात योग और सात करण को परस्पर गुणित करने पर उनचास (७x७=४९) भंग होते हैं। ये उनचास भंग भी तीन कालों की उपेक्षा से एक सौ सैतालीस (४९x३=१४७) भंग हो जाते हैं।

इस चर्चा के पश्चात् प्रस्तुत कृति में आचार्य ने श्रावक के बारह व्रतों और उनके प्रत्येक के अतिचारों की विस्तृत चर्चा की है। उनके द्वारा वर्णित अतिचारों की यह सूची उपासकदशा से बहुत कुछ मिलती है। किन्तु कुछ अवधारणाओं को लेकर हरिभद्र का मतवैभिन्य भी दृष्टिगत होता है। उदाहरण के रूप में जहाँ छठें दिग्व्रत की चर्चा में जहाँ अन्य आचार्यों ने अन्य गुणव्रतों के समान इस गुणव्रत को भी आजीवन के लिए ग्राह्य माना है वहाँ आचार्य हरिभद्र ने दिग्व्रत का नियम चातुर्मास या उससे कुछ अधिक महीनों के लिए ही बताया है। आश्चर्य यह भी है कि उन्होंने दिग्व्रत के सर्वमान्य अतिचारों यथा – उर्ध्व, अधो एवं तिर्यक् दिशा की मर्यादा का

अतिक्रमण आदि की चर्चा के साथ ही निर्धारित क्षेत्र के बाहर आनयन और प्रेषण को भी दिग्व्रत का अतिचार माना है। सामान्यतया इनकी चर्चा दिशावकालिक नामक शिक्षाव्रत में की जाती है। शेष गुणव्रतों की चर्चा में कोई विशिष्ट अन्तर नहीं देखा जाता है। शिक्षाव्रतों के अतिचारों का विवेचन भी उन्होंने उपासकदशा की परम्परा के अनुसार ही किया है। अणुव्रतों, गुणव्रतों और शिक्षाव्रतों के प्रसंग में उन्होंने स्पष्ट रूप से यह प्रतिपादित किया है कि जहाँ पाँच अणुव्रत और तीन गुणव्रत आज़ीवन के लिए ग्रहण किए जाते हैं वहाँ शिक्षाव्रत निश्चित समय के अथवा तीन गुणव्रत आजीवन के लिए ग्रहण किए जाते हैं वहाँ शिक्षाव्रत निश्चित समय के अथवा दिनों के लिए ही ग्रहण किए जाते हैं। श्रावक के १२ व्रतों की इस चर्चा के पश्चात् उन्होंने संलेखना का उल्लेख तो किया है, किन्तु उसे श्रावक का आवश्यक कर्त्तव्य नहीं माना है।

भगवान् महावीर और औषध विज्ञान

मुनि दर्शन विजयजी

मार्जार—मार्जारः स्यात् खटवांश-बिडालयोः, खट्टी वस्तु **क० स० श्री हेमचन्द्र सूरी कृत हेमी अनेकार्थ नाम माला। वैद्यक शब्द सिन्धु जैन धर्म (प्रकाश वर्ष-५४ अ० १२ पृ ४२७)**

मार्जार– इगुद्यां, तापस, तरु मार्जार। इन्दुगी का पेड़ जिसके तेल में बिजौरा जंग हरडे वगैरह तले जाते हैं।

(—हेमी निघण्टु संग्रह)

मार्जार—बिल्ली या बिडाल।

मार्जारी, मार्जारिका, मार्जारांध मुख्या - कस्तूरी।

मार्जारगन्धा, मार्जारगन्धिका, एक प्रकार का हिरण।

—(श्री जैन सत्य प्रकाश व० ४ अ० ७ क्र० ४३)

उपरोक्त शब्द और इनके अर्थ से मार्जार की वनस्पति वर्ग में व्यापकता का पूर्ण परिचय मिल जाता है।

अब यदि भगवान् महावीर के दाहरोग के विषय में विचार किया जाय तो यह स्वीकार करना होगा कि इस में बिडाल की तो कोई उपयोगिता ही नहीं है। इसके विपरीत मार्जार वनस्पति खटवाँश या तेल लाभदायक है। इस प्रकार उक्त रोग पर मार्जार वनस्पति खटांवश या तेल की भावना वाली औषधि ही उपचार स्वरूप दी गई थी। क्योंकि दाह-रोगों में खटाई आदि उपयोगी है।

रोग में मार्जार नामक वायु विकार विद्यमान था। इस विकार की शाँति के लिये जो संस्कार दिया जाय वह 'मार्जार कृत' कहलाता है, इस प्रकार यहां मार्जार का अर्थ वायु भी है। भगवती सूत्र के प्राचीन टीकाकारों ने भी इस शब्द का अर्थ वायु तथा वनस्पति ही लगाया है यथा—

मार्जारो वायुविशेषः तदुपशमाय कृतम्-मार्जार-कृतम्।।

अपरे त्वाहुः—मार्जारो बिडालिकाभिधानो वनस्पतिविशेषः तेन कृतं भावितं यद् तत्।

(आ० श्री अभयदेवसूरि कृत भगवती टीका पत्र—६९१)

(आ० श्री दानशेखरसूरि कृत भ० टीका पत्र)

अर्थात् मार्जार वायु को दबाने के लिये जो औषध-संस्कार दिया जाय वह मार्जार कृत माना जाता है और मर्जार, अर्थात् विडालिका नामक वनस्पति, से जो संस्कार किया जाय वह भी मार्जार कृत माना जाता है।

इस सब व्याख्या का आशय यह है कि यहाँ मार्जार शब्द वनस्पति का द्योतक है।

(९) कड़ए

कड़ए शब्द पुर्ल्लिग है, संस्कार का सूचक है, 'मार्जार' शब्द से सम्बद्ध है तथा 'मंसए' का विशेषण है। इसका संस्कृत पर्याय 'कृतकः' है।

यदि यहाँ हड़य, हए, वहिए आदि शब्दों का प्रयोग होता तो इसका अर्थ विडाल से मारा हुआ भी निकल सकता था परन्तु यहाँ 'कडए' का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है मारजार से वासित भावित अर्थात् संस्कारित। इसके अतिरिक्त विडाल कुकड़ा को मारकर छोड़ दे, ऐसी अस्पृश्य तथा घृणित वस्तु को रेवती श्राविका उठाले तथा दाह रोग में उसका प्रयोग उचित मान लिया जाय यह सब मान्यताए अप्रसांगिक, वास्तविकता से दूर तथा कपोल-कल्पित जंचती है। और फिर 'मंसए' और 'कड़ए' का पुलिग प्रयोग भी माँस का पक्षपोषण नहीं करता तथा इस मान्यता को निराधार बना देता है।

औषधि विज्ञान में संस्कारित वस्तुओं के लिये दधिकृत, राजीकृत, मार्जारकृत इत्यादि का प्रयोग होता है ज़िसका अर्थ दही से संस्कारित होता है। तात्पर्य है कि यहां कडए का अर्थ संस्कारित और मार्जार कडए का अर्थ मार्जार वनस्पति से संस्कारित (भावना वाला) ठीक बैठता है।

(१०) कुक्कुड

'कुक्कुड' एक प्रकार की खाद्य वनस्पति है जो कि बहुत दिनों तक टिक सकती है। इसके सेवन से गर्मी, रक्तदोष, पित्तज्वर, आमातिसार आदि रोग शान्त होते हैं इसका संस्कृति पर्याय कुक्कुट है। कुक्कुट के कतिपय तद्भव शब्द तथा उनके अर्थ उदाहरणार्थ हम नीचे प्रस्तुत करते हैं :—

कुक्कुट— श्रीवारकः शितिवरो वितन्तुः कुक्कुटः शितिः।

श्रीवारक, चतुष्त्री– (हेमी निघण्टु संग्रह)

कुक्कुटी— कुक्कुटी, पूरणी, रक्तकुसुमा, घुणवल्लभी।

पूरणी वनस्पति- (हेमी निघण्टु संग्रह)

कुक्कुट—शितिवारः सितिवरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ।।२९।।
श्रीवारकः सूचिपत्रः, पर्णकः कुक्कुटः शिखी।
चांगेरीसदृशः पत्रैश्चतुर्दल ईतीरित ।।३०।।
शाकों जलाविन्ते देशे चतुष्पत्रीति चोच्यते।

अर्थ- चउपत्तिया—भाजी—वनस्पति।

(भाव प्रकाश निघण्टु, शाकवर्ग शालिग्राम निघण्टु भूषण शाक वर्ग)

कुक्कुट—कुक्कुटः शाल्मलिवृक्षे- (वैद्यक शब्द सिंधु)

कुक्कुट - विजौरा (भगवती सूत्र टीका)

मधुकुक्कुटी—स्त्री, मातुलुंगवृक्षे, बिजौरा,

(वैद्यक शब्द सिन्धु टीका)

सत्यभामा और भामा—इनदोनों शब्दों का एक ही अर्थ है। इसी प्रकार मधुकुक्कुट और कुक्कुट भी समानार्थ हैं।

कुक्कुट - घास का उल्का, आग की चिंगारी, शूद्र और निषादण की वर्णसंकर प्रजा।

—(जै० स० प्र० व० ४ अ० ७ क्र० ४३)

कुक्कुट — (१) कोषंडे (२) कुरडु (३) साँवरी। इसके अतिरिक्त कुक्कुट पादप, कुक्कुट पादी, कुक्कुट पुट, कुक्कुट पेरक, कुक्कुट मंजरी, कुक्कुट मर्दका, कुक्कुट मस्तक, कुक्कुट शिख, कुक्कुटा, कुक्कुटांड, कुक्कुटा-भकुक्कुटी, कुक्कुटोरग आदि वैद्यक शब्द हैं।

—(निघण्टु रत्नाकर, जै० स० प्र० क० ४३)

कुक्कुट - मुर्गा, वतकमुर्गा।

उपरोक्त शब्दों से स्पष्ट है कि कुक्कुट शब्द वनस्पति में वहु व्यापक है।

वैद्यक ग्रन्थों में कुक्कुट वनस्पति यानि चउपत्तिया भाजी तथा बिजौरा के गुण दोष का वर्णन निम्न प्रकार हुआ है।

(१) चउपत्तिया भाजी—

सुनिषण्णो हिमो ग्राही, मोह दोष त्रायापहो ।।३१।।
अविदाही लघुः स्वादुः कषायो रूक्ष दीपनः ।।
वृष्यो रुच्यौ ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रम प्रणुत् ।।३२।।

अर्थात् सुनिषण्ण शीतल, त्रिदोषनाशक, दाहशामक, सुपाच्य, दीपक और ज्वरशामक है।

—(भावमिश्र कृत भावप्रकाश निघण्टु, शाकवर्ग)

पारापत फल का गुण भी दाह नाशक, ज्वर नाशक व शीतल बताया है।

चौपत्तिया भाजी दाह नाशक, ज्वरहरी, शीतल व मन शोधक है।

खटाश– भाजीनां शाक दही नाखीने खाटां करवानों रिवाज जाणी तो छे। एटले खटाशनी जग्याए दही लइए तो झाड़ाना रोगमाँ अत्यंत फायदा कारक छे। आवी रीते आ चीजों प्रभु महावीर स्वामी ना रोगनी दृष्टिए उपयेगी छे।

–(महो० काशीविश्वनाथ प्रहलाद जी व्यास, साहित्याचार्य, काव्य साहित्य विशारद, मीमांसा–शात्री, एल० ए० एम० लिखित शास्त्रीय खुलासो, जैनधर्म प्रकाश पु० ५४ अ० १२ पृ० ४२७)

(२) बिजौरा–

श्वास कासा ऽरुचिहरं तृष्णाध्नं कष्ठशोधनम् ।।१४८।।
लघ्वम्लं दीपनं हृद्यं मातुलुंगमुदाहतम्।।
त्वक् तिक्ता दुर्जरा तस्य, वातकृमिकफापहा ।।१४९।।
स्वादु शीतं गुरु स्निग्धं, मासं मारुतपित्तजित्।।
मेध्यं शूलानिलछर्दि—कफारोचकनाशकम् ।।१५०।।
दीपनं लघु संग्राहि, गुल्मार्शोघ्नं तु केसरम्।।
शूलानिलविबन्धेषु, रसस्तस्योपदिश्यते ।।१५१।।
अरुचौ च विशेषेण, मन्दे ऽग्नौ कफ मारुते।।

बिजौरा– तृष्णा शामक, कण्ठ शोधक, तथा दीपक है।

बिजौरा का मांस (गूदा) शीतल, वायुहर तथा पित्तहर है।

—(सुश्रुत संहिता)

त्वक् तिक्तकटुका स्निग्धा, मातुलुंगस्य वातजित्।।
बृहणं मधुरं मांसं, वातपित्तहरं गुरु।।

बिजौरा का मांस (गूदा)–पौष्टिक, मधुर, वातहर और पित्तहर है।

(वाग्भट्ट)

बीजपुरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः।।
बीजपुरफलं स्वादु, रसे ऽम्लं दीपनं लघु ।।१३१।।

रक्तपित्तहरं कण्ठ—जीव्हा हृदय शोधनम्।।
श्वास कास ऽरुचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम् ।।१३२।।
बीजपुरो ऽपरः प्रोक्तो मधुरो मधुकर्कटी।।
मधुकर्कटिका स्वाद्वी रोचनी शीतला गुरुः ।।१३३।।
रक्तपित्त क्षय श्वास कास हिक्का भ्रमा ऽपहा ।।१३४।।

बिजौरा— रक्तपित्त नाशक है, कण्ठ-जिव्हा-हृदय शोधक है, श्वास कास तथा अरुचि का दमन करता है व तृष्णाहर है।

मधु बिजौरा शीतल तथा रक्तपित्त नाशक है।

—(भाव प्रकाश निघण्टु फल वर्ग)

मुर्गे का मांस उष्णवीर्य है। यह दाह को बढ़ाने वाला है।

—(सुश्रुत संहिता)

उक्त बातों को दृष्टि में रखकर विचार किया जाय तो यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ रोग निवारणार्थ मुर्गे का प्रयोग युक्ति संगत नहीं है तथा स्थिति के सर्वथा प्रतिकूल पड़ता है 'चउ पत्तिया भाजी' और 'बिजौरा' की उपयोगी है। अतः रेवती श्राविका के घर में जो 'कुक्कुड मॉसक' था वह बिजौरा-पाक के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो सकता। यथा—

मार्जारो वायुविशेषस्तदुपशमनाय कृतम्—संस्कृतम्—मार्जार—कृतम्। अपरे त्वाहुः मार्जारो बिडालिकाभिधानो वनस्पति विशेषः तेन कृतं भावितं यत् तत् तथा किं तदित्याह 'कुक्कुट मांसक' बीजपूरकं कटाहं आहराहिति निरवद्यत्वात् पत्तगं मोएति पात्रकं पीठरक विशेषं मुंचति सिक्कके उपरिक्तं सत् तस्मादवतारयतीत्यर्थः।

(आ० श्री अभयदेवसूरि कृत भगवती टीका पृ० ६९१)

(आ० श्री दानशेखर सूरि कृत भ० टीका)

आशय यह हैं कि बिजौरा पाक को ही कुक्कुटमॉसक की संज्ञा मिली है और यही (बिजौरा पाक ही) रेवती श्राविका के वहां तैयार था।

(११) मंसए

मंसए शब्द बिजौरा से निष्पन्न, पुलिंगवाची द्रव्य का द्योतक है। इसका संस्कृत पर्याय मॉसक होता है। मॉस मांसक और उसके तद्भव शब्दों का अर्थ इस प्रकार है।

मांस (नपुंसक लिंग) गुदा, फलगर्भ, फांक

मांसक (पुंलिग) पाक, गुदा

मांस (नपुंसकलिंग) मांस, गर्भ

मांस फला (स्त्री लिंग) जटामांसी भूत जटा, बालछड़ वनस्पति।

—(भाव प्रकाश निघण्टु, कर्पुरादि वर्ग श्लो० ८९)

मांस फल (स्त्रीलिंग) मांसामिव कोमलं फलं यस्याः।

वार्तक्याम्, बैंगन, भाटा –(शब्द स्तोम महनिधि),

रक्त बीज,-मूंगफली (भाव प्रकाश पारिभाषित शब्द माला) इन अर्थों से यह सिद्ध होता है कि मांस शब्द माँस का द्योतक है तथा फल के गर्भ का भी द्योतक है किन्तु मांसकः शब्द से तो पाक का ही बोध होता है। और यदि भगवान् महावीर के दाह-ज्वर रोग के संदर्भ में इस शब्द पर विचार किया जाय तो भी माँस का अर्थ पाक ही उचित बैठता है।

देखिये—

(१) स्निग्ध उष्णं गुरु रक्तपित्तजनकं वातहरं च मांसं।।

सर्वं मांसं वातविध्वंसि वृष्यं।।

मुर्गे का मांस ऊष्ण वीर्य है। अतः यहाँ मांस का प्रयोग सर्वथा निषिद्ध ही माना जाता है।

(२) प्राचीन समय में फलगर्भ और बीज के लिये क्रमशः मांस और अस्थि का प्रयोग किया जाता था। जिनागमों तथा वैद्यक ग्रंथों से इस कथन के सम्बन्ध में अनेक उद्धरण उपलब्ध हो सकते हैं जैसे—

विएटं स—मंसकडाहं एयाइं हवन्ति एग जीवस्स।।९१।।

टीका—वृन्तं समंसकडाहं ति–समांसं सगिरं तथा कटाह एतानि त्रीणि एकस्य जीवस्य भवन्ति–एकजीवात्मकानि एतानि त्रीणि भवन्तीत्यर्थः।।

—(श्री पन्नावणा सूत्र पद १ सू० २५ पृ० ३६-३७)

से किं तं रुक्खा ? रुक्खा दुविहा पन्नता, तं जहा-एगट्ठिया य बहुबीयगाय से किं तं एगट्ठिया? एगट्ठिया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा–

निबं ब जंबु कोसबं, साल अंकोल पीलु सेलू य।

सल्लइ मोयइ मालुय, बउल पलासे करंजे य ।।१२।।

पुत्तंजीवय ऽरिट्ठे, बिभेलए हरिड़ए य भिल्लाए।
उंबेभरिया खीरिणि, बोधव्वे धायइ पियाले ।।१३।।
पुइय निंब करंजे, सुण्हा तह सीसवा य असणे य।
पुण्णाग णाग रुक्खे, सिरिवण्णी तहा असोगे य ।।१४।।

जेयावण्णे तहप्पगारा। एएसि णं मूला वि असंखिज्ज जीविया, कंदा वि खंधा वि तया वि साला वि पवाला वि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीविया, फला एगट्ठिया।। से त्तं एगट्ठिया।।

(पन्नवणा सू० पद० १, सू० २३, पृ० ३१, जीवाभिगम सूत्र, प्रति १, सूत्र २०, पृ० २६)

"त्वक् तिक्ता दूर्जरा तस्य वातकृमिकफापहा।
स्वादु शीतं गुरु स्निग्धं 'मांसं' मारुतपित्तजित्।।"

(सुश्रुत संहिता)

'त्वक्' तिक्तकटुका स्निग्धा मातुलुंगस्य वातजित्।
बृहणं मधुरं 'मांसं' वातपित्त—हरं गुरु।।

(सुश्रुत संहिता)

पूतना स्थिमती सूक्ष्मा कथिता मांसला मृता ।।८।।

(भाव प्रकाश निघण्टु हरितक्यादि वर्ग)

मांस फल - बैंगन (शब्द स्तोम महानिधि)

इस प्रकार मांस का अर्थ गूदा भी होता है।

नपुंसक लिंग वाला मांस शब्द ही मांस वाचक है। किन्तु पुलिंग शब्द मांस वाचक नहीं है। यहाँ तो माँस शब्द पुल्लिंग में है। कोई पंडितमन्य भाषा शास्त्री भ्रमित तथा त्रुटिपूर्ण अर्थ न कर बैठे, ऐसी सम्भावना की ही आवृत्ति रोकने के लिये यहां स्पष्टतः पुल्लिंग का प्रयोग किया गया है। इस पर भी कोई यहां इस शब्द का अर्थ मांस से लगाये तो इसको मनमानी ही कहा जायगा। तथ्य यह है कि पुल्लिंग होने के कारण यहां माँस का अर्थ माँस नहीं, बल्कि पाक है। भगवती सूत्र के प्राचीन चूर्णीकार व टीकाकारों ने भी "कुक्कुट मांसक बीज पुरकं कटाहं" (पन्नवणा स ू० पद०१, सू०२३, पृष्ठ३१, जीवाभिगम सूत्र, प्रति१, सू०२ पृष्ठ२६) लिखकर मांस का अर्थ पाक होने की पुष्टि की है।

इस प्रकार हमने काल परिस्थिति, अर्थ पद्धति तथा औषध विज्ञान को आधार मानकर विवादास्पद पाठ की विशद व्याख्या की है। हम यहां स्पष्ट कर देना चाहते हैं यदि इन विचार बिन्दुओं की स्थापना किये बिना हम किसी

पाठ का अर्थ लगा लें तो उसमें अशुद्धि रह जाने की सम्भावना है। ऐसी ही अशुद्धि भगवती सूत्र में उल्लिखित भगवान् महावीर द्वारा रुग्णावस्था में औषध-भिक्षा सम्बन्धित पाठ का अर्थ करते समय हो गई है। हम पाठ और उसका ठीक अर्थ नीचे दे रहे हैं :–

तत्थणं रेवती गाहावइणिए मम अट्ठाए दुवे कवोय–सरीरा उक्खड़िया, तेहिं नो अट्ठो। अत्थि से अन्ने पारियासिए मज्जार कड़ए कुक्कुड़मंसए तमाहराहि एएणं अट्ठो।

अर्थ–गाथापति की पत्नी रेवती ने वहां मेरे निमित्त दो कुष्माडपाक बना कर रखे हैं। वह काम के नहीं हैं। किन्तु उसके वहां दूसरा विशेष पुराना और विराली वनस्पति की भावना वाला बिजौरे का पाक है। उसे ले आओ वह काम का है।

ऊपर के पाठ में प्राणीवाचक औषधि के स्वरूप की व्याख्या की गई है। एक पाठ विशेष पर ही वह निर्धारित विचार बिन्दु लागू होते हो, ऐसी बात नहीं है। ऐसे कई उद्धरण उदाहणार्थ प्रस्तुत किये जा सकते हैं कि जहां प्राणीवाचक शब्द औषधि-स्वरूप प्रयुक्त हुए हैं और यदि उनका अर्थ ऊपरी तौर (Face Value) पर किया जाय तो हास्यास्पद तथा भ्रमात्मक (Mis Leading) हो जायगा। यथा—

ब्रह्माणं चक्रपाणिं कुसुमशररिपं वैष्णवं पेशयित्वा
क्षीरेणाज्येन सम्यक् समघृतमधुना लेपयेत् तां शिलां च
लिप्ता क्लिन्ना समस्ताद् भवति यदि शिला प्रोषिता चैकरात्रं
जानियात् तत्र गर्भे फणिपतिरथवा वृश्चिको वाथ गोधा।।३२।।

अनन्तशयनम् संस्कृत ग्रन्थावली का ग्रंथांक ७५ त्रिवेन्द्रम् का कुमार मुनि कृत शिल्परत्न भा० १ अ० १४ श्लो० ३२।

उक्त श्लोक कुमार मुनि के शिल्परत्नग्रंथ में आया है और इसमें उन्होंने विचित्र शब्दों से जीव-विज्ञान बताया है। इस श्लोक का अर्थ करते समय बड़े से बड़ा शास्त्रपारंगत भी विचार में पड़ जायेगा तथा बड़े से बड़े न्यायालय भी इस पर निर्णय देता हुआ किंकर्तव्यविमूढ़ हो जायगा क्योंकि स्थूल बुद्धि वाला व्यक्ति तत्काल इसका अर्थ ब्राह्मण, कृष्ण, कामदेव वा विष्णु को पीसकर इत्यादि ही करेगा। परन्तु जीव-विज्ञान व निघण्टु आदि शास्त्रों का आधार लेकर इसका वास्तविक अर्थ किया जा सकता है।

इस प्रकार हमारी व्याख्या के प्रकाश में यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भगवान महावीर ने औषधि-स्वरूप मांसाहार का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने बिजौरा-पाक का सेवन किया था जिससे उनका रोगदाह शांत हुआ।

यो विश्व वेद विद्यं जनन जलनिधे भंगिन पारदृश्वा।
पौर्वापिर्याऽविरुद्धं वचनमनुपमं निष्कलंकं यदीयम्।।
तं वदे साधुवन्द्यं सकल गुणनिधिं ध्वस्त दोषद्विषं तं।
बुध्धं वा वर्द्धमानं शतदलिनिलयं केशवं वा शिवं वा।

(कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरि)

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

दुष्काल के समय में प्रजा, आश्रित स्वजन, मित्र की यथाशक्ति सेवा और सहयोग करना चाहिए। परमदानवीर जगडुशाह विक्रम सम्वंत् १३१३, १३१४,१३१५, के दुष्काल में अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति जनता की सेवा में लगा दी थी। सभी मिलाकर जगडुशाह ८ अरब, ६ करोड़, ५० लाख मन अनाज बिना मूल्य प्रजा की सेवा में समर्पण किये थे। उनकी मृत्यु के समय दिल्ली के बादशाह ने अपना मुकुट उतारकर उनके प्रति श्रद्धांजली अर्पण की था। राजा अर्जुन देव इनकी मृत्यु का समाचार पाकर बहुत रोये थे।

अमीर हो या गरीब प्रत्येक मित्र, स्वजन, गोत्रिय के घर कार्य प्रसंग में अवश्य उपस्थित होना चाहिए। आज की स्थिति तो ऐसी है कि धनी व्यक्ति अपने गरीब सगे भाई के घर जाना उचित नहीं समझते है। जिस कारण गरीब व्यक्ति के मन में हीनता की भावना आ जाती है। आज जातीय या धर्म के आधार टूट कर गरीब-अमीर को विभाजित करके एक नया समाज तैयार हो रहा है। जो अत्यन्त खतरनाक है।

एक धनी व्यक्ति था। किसी सम्बन्धी के घर कोई कार्य हो या आमंत्रण आया हो तो नौकर को भेज देता था। गाँव और सगे सम्बन्धी इनके व्यवहार से दुःखी थे। एकबार उस धनी व्यक्ति की माता मर गई। शमशान यात्रा के लिये सभी को बुलाया गया। सभी ने नौकर भेज दिया। तब उसकी समझ में आ गया।

अन्य समाज के धार्मिक कार्य में उनका मन और सम्मान रखने के लिये उनके कार्यक्रम में अवश्य आमंत्रण आने पर उपस्थित रहे। समय समय पर यथाशक्ति सहयोग करें।

शिष्ट पुरुष के मान्य मार्ग पर चलना अपना कर्तव्य समझे। जीव का मानसिक, सामाजिक या धार्मिक तथा अध्यात्मिक विकास परस्पर सहयोग और वात्सल्य से ही संभव है। मन से व्यक्ति कितना ही शुद्ध क्यों न हो व्यवहार में कुशल होना अनिवार्य है।

मन से व्यक्ति कितना ही स्वच्छ और धार्मिक क्यों न हो, उसको व्यवहार में शुद्धता लाना आवश्यक है। मानले – अगर एक व्यक्ति मन से अत्याधिक शुद्ध है, पर किसी स्त्री से शुद्ध मनोभाव से अगर बारम्बार मिलता है तो समाज में निन्दा का पात्र बनता है।

अन्य के सुख में सुखी, दुःख में दुःखी, शांति में शांति, जीवन में जीवन और मौत में मौत की अनुभूति आर्य संस्कृति की देन है। सद्गृहस्थ उसी को कहते है जो परहित को प्रथम महत्व देते है।

आदेशकाल आचरण त्याग— जिस देश में या काल में मानवता की रक्षा न हो उसे आदेश या अकाल कहते है।

आत्मा के हिताहित में मुख्य रूप से आत्मा का ही हाथ है, व्यक्तिगत रूप में आत्मा का ही हाथ है, फिर भी बाह्य द्रव्य देश, काल भी निमित्त होता है। व्यक्तिगत रूप में कोई भी काल या देश परिस्थितिवश आदेश या अकाल बन सकता है। पर सामान्यरूप में भारतीय संस्कृति में कुछ स्थान को आदेश (अयोग्यस्थान) माना है जैसै—अनार्य देश, जेल, जुआखाना, वैश्यालय, कत्लखाना आदि।

जहाँ मानवता न हो, सद्धर्म की उपासना न होती हो, आत्मा परमात्मा का भेद न हो उससे अनार्य देश कहते है।

जेल व्यक्ति को सुधारने के लिए बनाये जाते हैं। यहाँ दोषित व्यक्ति को अपनी भूलों का प्रायश्चित करने के लिए यही रखा जाता है। पर यहाँ परिणाम इससे विपरीत देखने को मिलता है। व्यक्ति यहाँ अलग-अलग स्वभाव के लोगों से मिलकर अनेक अपराधों की जानकारी पा लेता है और फिर यहाँ से छुटने के बाद उस ओर आगे बढ़ता है।

अनधिकृत धन प्राप्ति की कामना का स्थान है जुआखाना। यहाँ पर आने के बाद व्यक्ति का नैतिक पतन हो जाता है। जुए के माध्यम से व्यक्ति को धन मिलने पर वह भौतिकवादी बन जाता है और धन न मिलने पर चोरी और आत्महत्या जैसे घृणित कार्य करता है।

कत्लखाना जहाँ करोड़ो निर्दोष जीवों को मार दिया जाता है। वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण ही हिंसात्मक होता है। वहाँ की हवा भी व्यक्ति को पाप विचार में अतिशीघ्र प्रभावित कर सकती है।

मदिरा व्यक्ति का विवेक नष्ट कर देती है। जो व्यक्ति मदिरा नहीं पीता है, पर उस स्थान के पास बारम्बार जाता है तो उस व्यक्ति पर समाज संदेह की दृष्टि से देखने लगता है। इसीलिये हमेशा सद्गृहस्थ को निन्दनीय स्थान या समय को त्याग देना चाहिये।

पारिवारिक पांच गुण— (१) माता-पिता का पूजन (२) कृतज्ञता (३) ज्ञानी की सेवा (४) पोष्य का पोषण (५) अतिथि सत्कार।

माता-पिता का पूजन— अपने जीवन में जिसकी असीम कृपा है, ऐसे पूज्य माता-पिता गुरुजनों की सेवा भक्ति करना सद्गृहस्थ का परम कर्तव्य है।

तीन प्रकार के गुरुजन—

माता-पिता (२) लौकिक गुरु शिक्षा गुरु) (३) लोकोत्तर गुरु (धर्म गुरु)

संसार के सभी उपकारों में माता का स्थान सर्वोपरि है। माता के असीम स्नेह वात्सल्य के द्वारा ही हमारे जीवन का वास्तविक विकास होता है। जीवन को बनाने या बिगाड़ने में माता का हाथ ९० प्रतिशत होता है। नव महीने तक माता अपने गर्भ में रखकर हमारे हित के लिये अनेक कष्टों को सहन करती है। इच्छा होते हुए भी हमारे लिए संयमित जीवन जीती है। हमें जन्म देने के बाद माता हमारे सुख के लिए स्वयं मल-मूत्र में रहकर हमें कष्ट से बचाने का प्रयास करती है। स्वयं न खाकर हमें खिलाती है। संतान के हित रक्षा के लिए गर्भावस्था और बाल्यावस्था में माता के पालन करने योग्य कठोर नियमों का कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका में सविस्तार उल्लेख मिलता है। जन्म के बाद प्रथम १५ दिन के अन्दर माता के सहवास से वंच्छित हो जाने पर ९५ प्रतिशत बच्चों की मृत्यु हो जाती है। माता-पिता हीन बच्चे को लौकिक भाषा में बेचारा कहा जाता है।

आर्यावर्त की संस्कृति में मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव कहा गया है।

धर्म का शुभारंभ माता-पिता की सेवा-पूजा से ही होता है। माता-पिता की सेवा ही संतान का प्रथम धर्म है। गरीब की दुआ—माता-पिता का आशीर्वाद धर्मगुरु की कृपा और परमात्मा का अनुग्रह उत्तरोत्तर उत्तम है।

भगवान महावीर स्वामी की मातृभक्ति—परमात्मा महावीर स्वामी की मातृभक्ति अपूर्व थी। गर्भावस्था में माता को कष्ट न हो इस भावना से अपना अंगोपांग एकबार स्थिर कर दिये थे। आपको याद रहे कि तीर्थंकर परमात्मा को गर्भावस्था में भी मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान ये तीन ज्ञान होते है। गर्भस्थ संतान की हलन-चलन की क्रिया शिथिल देखकर माता त्रिशला को संदेह हुआ कि गर्भ नष्ट हो गया! इस प्रकार मन ही मन सोच कर रोने लगी। गर्भस्थ महावीर सोचने लगे ....अभी तो मेरा जन्म भी नहीं हुआ है; इसमें इतना स्नेह है तो मेरे जन्म के बाद क्या स्थिति होगी? और भगवान महावीर ने गर्भ में ही यह प्रतिज्ञा कर लिये कि माता-पिता की उपस्थिति इस संसार में जबतक होगी, तब तक मैं संसार त्याग नहीं करूंगा।२८ वर्ष की उम्र में माता-पिता की मृत्यु के बाद दीक्षा लेने के लिये तैयार हुए। पर बड़े भाई नन्दीवर्धन के कहने पर फिर दो वर्ष गृहावस्था में रहकर ३० वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण किये। ये थी परमात्मा की मातृ भक्ति।..........। बड़े भाई के प्रति स्नेह....................।

आज हम छोटी-छोटी बात पर माता पिता, बड़े भाई से कलह करते है।

इसमें प्रश्न हो सकता है कि फिर माता-पिता की उपस्थिति में दीक्षा देना अनुचित है? नहीं.......इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये हमें तत्सम्बन्धित व्यक्ति की स्थिति की जानकारी लेनी होगी। अगर हमारे नहीं रहने से माता-पिता को जीवन निर्वाह करने में कष्ट हो तो हमें उनकी सेवा अवश्य ही करनी चाहिए। और अगर मात्र मोहवश हमें इस संसार में रोक रखना चाहते है तो उन्हे समझाकर दीक्षा लेना ही उचित है। क्योंकि साथ रहने के बजाय शासन की सेवा करके माता पिता को अधिक आत्मिक आनन्द दिया जा सकता है। हमारी आराधना, उपासना, शासन सेवा की रीति से उन्हे अपूर्व सुख की अनुभूति होती है। जो सामान्य सेवा से लाख गुणा महत्वपूर्ण और आत्म हितकारी हैं।

आज मानव समाज का दुर्भाग्य है कि संतान माता-पिता को कोई स्थान नहीं देती है। पूजा-नमस्कार करना तो दूर की बात सक्षम होते ही शादी करके स्वतंत्र रहना अधिक पसन्द करते है। अगर कोई कारण से

संयुक्त परिवार में रह भी जाय तो वृद्ध माता-पिता को कोई विशेष सम्मान या महत्व नहीं दिया जाता है।

नित्य सुबह माता-पिता को नमस्कार करना हमारा धर्म है। वृद्धों को सबसे प्रिय वस्तु है............सम्मान।

आज की स्थिति विपरीत है—

—आज का सुधारवादी समाज माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेज रहा है।

—नौकर के भरोसे छोड़ देते है।

—मात्र आर्थिक खर्च वहन करना ही सेवा का इति श्री समझते है।

—कुछ लोग तो वृद्ध को मार देना भी अपना धर्म समझते है।

—उन्हें निर्माल्या समझा जाता है।

कृतज्ञता— कृतं जानाति सः कृतज्ञः। अपने उपर किये उपकारक व्यक्ति को याद रखना कृतज्ञता है। जीवन में जिन-जिन व्यक्तियों की कृपा हमें मिली है, उनको कभी भी भूलना नहीं चाहिए। उपकारी को उपकार का बदला देना तो कभी भी संभव नहीं है, पर हमें यथाशक्ति उनकी मानसिक, शारीरिक, आर्थिक सेवा करके उसे उपकार का मूल्य देने की भावना रखनी चाहिए। दूसरी बात यह भी याद रखे कि उपकार करने वाले व्यक्ति को बदला पाने की भावना से कभी भी कार्य नहीं करना चाहिए। उपकार का बदला पाने की भावना से किया गया कार्य उपकार नहीं नौकरी हैं। इन कार्यों को कर्तव्य कहा जाता है, जिनके परिवर्तन में कुछ कहा जाता है या लेने की आशा रहती है । उपकार करने वाले या पाने वाले के मन में दया का भाव भी नहीं आना चाहिए क्योंकि दया भेद रेखा खड़ा करता है। इसमें दाता और भिखारी की रेखा तैयार होती है। देने वाला हमेशा स्वयं को सक्षम समझता है और लेनेवाला स्वयं को निर्बल समझता है। इसीलिये पूज्य के प्रति दया नहीं कृतज्ञता भाव रखना ही उचित है।

अंधे माता-पिता के उपकार को याद करके उनकी सेवा में अपना जीवन अर्पण किये थे, महान भक्त श्रवण कुमार। मृत्यु के अन्तिम समय उन्हे मृत्यु का कष्ट नहीं पर अंधे माता-पिता को पानी न पिला पाने का कष्ट था।

गुरु की सेवा करके महान् हो गये एकलव्य और परमगुरु भक्त महमार्हत् कुमारपाल राजा। राजा कुमारपाल शिवभक्त थे। कलिकाल सर्वज्ञ

आचार्य हेमचन्द्र सूरिजी के परमभक्त बन गये। उपकार के बदले में जैन शासक की अपूर्व सेवा किये।

गुण गाने वाले भक्त होते है, भूल दिखाने वाला गुरू है,

कवि लिखते है पृथ्वी कहती है मुझे कृतघ्न और विश्वासघाती का भार लगता है पहाड़ पर्वत का नहीं,

पशु और वनस्पति हमारे ऊपर महान् उपकार करते है, पर मानव उनको नष्ट करके महानैसर्गिक शक्ति को असंतुलिा बना रहे है।

सिकन्दर एक कुशल शासक, वीर योद्धा के साथ-साथ परम गुरु भक्त थे। एकबार वे अपने गुरु अरस्तु के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक नदी पार करना था। नदी का रास्ता उनके लिए अपरिचित था। सिकन्दर गुरु को किनारे पर बैठाकर स्वयं पहले नदी पार किये। फिर गुरुजी को नदी पार करवाये। उसपार जाकर अरस्तु ने सिकन्दर से पूछा-तुमने ऐसा क्यों किया? सिकन्दर बोला–नदी की धारा अनजान् थी। उसे जानने के लिये मैं प्रथम पानी में उतरा। गुरुबोले–अगर कोई अनहोनी घटना घटती, तुम अगर धारा में बह जाते। सिकन्दर बोला–इसीलिए तो मैं प्रथम उतरा था। अगर कोंई खतरा होता तो मैं मर जाता पर आप बच जाते। आपके जीवित रहने पर सौ सिकन्दर तैयार हो सकते हैं पर मैं एक भी अरस्तु तैयार करने में असमर्थ हूँ। ऐसी थी गुरुभक्ति।

ज्ञान वृद्ध की सेवा–वृद्ध अर्थात परिपक्व जो अपनी अवस्था में परिपक्व होते है उन्हें उस कक्षा का वृद्ध कहते है। वृद्ध तीन प्रकार के है।

(१) ज्ञानवृद्ध (२) वयोवृद्ध (३) चारित्र वृद्ध

ज्ञान सम्पन्न को ज्ञान वृद्ध और चारित्र सम्पन्न को चारित्र वृद्ध कहते है। वय अर्थात् आयुष्य में अधिकता होने पर उन्हें वयोवृद्ध कहते है। इस प्रकार ज्ञानवृद्ध की सेवा करना हम सभी का परम कर्तव्य है। ज्ञानवृद्ध की सेवा, सहवास आदि करने से अनेक लाभ होता है।

जैसे (क) हितकारिणी शिक्षा–ज्ञानवान व्यक्ति के प्रत्येक शब्द पर कुछ न कुछ शिक्षा होती है। वे अनावश्यक और निरुदेश्य बात नहीं करते है। गलती होने पर भी उसको सुधारने की बात करते है।

(ख) अनुभवज्ञान–ज्ञानी पुरुषों के अनुभव के खजाना होने के कारण उनसे अनेक प्रकार का अनुभवज्ञान मिलता है।

(ग) सत्पुरुष का मिलन– उनके पास आने वाले महान व्यक्तियों से मिलन होता है।

(घ) ज्ञान की प्राप्ति– ऐसे व्यक्ति के सहवास में रहकर ज्ञान की उपासना में सरलता रहती है।

(ङ) कर्मक्षय– पूर्व कृत् कर्म का क्षय व नयाकर्म बन्ध अटक जाता है।

(च) विवेक की प्राप्ति– गुणवान होकर विचारशील व विनय-विवेक की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार ज्ञानी की सेवा से अनेक लाभ होता है।

आश्रित पोषण– माता-पिता पूज्य है, फिर भी रोगीष्ट या वृद्ध होने पर आश्रित भी कहलाते है। इसके उपरान्त परिवार के नौकर, रोगीष्ट, असहाय भाई-बहन आदि भी आश्रित है। ऐसे आश्रित व्यक्ति की सभी प्रकार की सेवा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। जैनागम के मुख्य आगम कल्प सूत्र में नौकर को कौटुम्बिक पुरुष कहा गया है। नौकर के साथ परिवार के सदस्य के रूप में ही व्यवहार करना चाहिए।

परिवार के माता-पिता, अन्य सदस्य नौकर आदि के साथ उचित व्यवहार नहीं करने पर निम्नोक्त परिणाम आते है। (१) तीव्र आर्तध्यान करते है (२) भूखा या अशांत रहने पर क्रोधी, उत्तेजित बनते है। (३) चोरी करते है (४) परस्पर शत्रु बनकर एक दूसरे का अहित करते है या करने का विचार करते है। (५) परिवार की स्थिति को देखकर धर्म या समाज की निन्दा होती है। (६) परिवार में अकारण दुःख आ जाता है। (७) परिवार के धन सम्पत्ति का अन्य व्यक्ति अनुचित लाभ उठाना है। (८) परिवार की गुप्त बात अन्य व्यक्ति जान जाते है। भारतीय संस्कृति का एक सूत्र है 'शिवमस्तु सर्वजगत' अर्थात् सभी जीव सुखी हो, यह कार्य करना हमारे लिए संभव न हो तो पारिवारिक सदस्यों को तो सुख देना ही चाहिए। अपने आश्रित का भविष्य सुरक्षित करने के लिए प्रयास करना चाहिए। आकस्मिक कार्य या नौकर आदि के पारिवारिक कार्य में सौहार्द भाव से सहयोग करना चाहिए।

आश्रित के लिए इतना कभी न करें— (१) अधिक ममता या स्नेह न रखे, इसमें दोनों के अहित की संभावना है।

(२) अपना भार कम करने के लिए आश्रित को उन्मार्ग में जाने का अवसर या सलाह न दें।

(३) अनीति की सम्पत्ति को आश्रित के विकास का स्रोत न बनावे। अन्ततः उन्हें इसकी जानकारी न दें।

(४) उन्हें आलसी न बनावे। अधर्म की ओर जाने का अवसर न दें।

(५) सन्मार्ग में बाधा न डाले। सन्मार्ग में जाने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हे सत् बनाने के लिए स्वयं भी कुछ उचित धर्म कार्य सत्कर्म करें।

(६) उनके पोषण में अभिमान न करें।

(७) उनके पास परिवर्तन में कुछ पाने की इच्छा न रखें। इसे व्यापार का रूप न दें।

(८) स्वयं का कार्य सिद्ध करने के लिए उनसे अनुचित कार्य न करावें।

आश्रित से उचित व्यवहार का कुछ अंशः

सेठ मोतिशा— सेठ मोतिशा एक भव्य मन्दिर का कार्य करवा रहे थे। कार्य पूर्ण होने पर सभी मिस्त्रियों को सोने के हार भेट दिये। एक व्यक्ति उसे बेचने के लिए सेठ की दुकान पर ही आया। बेचने का कारण पूछने पर जानकारी मिली कि कर्ज उतारने के लिये हार बेचना चाहता है। सेठ को जानकारी मिलते ही हार सहित जितना कर्ज था पूरा कर दिया।

(ख) मृत्यु के समय मोतिशा सेठ ने सभी कर्जदारों का कर्ज माफ कर दिया था।

(ग) कर्वे एक रात्रि को आराम कर रहे थे। रात्रि को उनकी एक नौकरानी का एक्सीडेन्ट हो गया। दो सौ रूपये की सहायता मांगने पर तुरन्त दे दिये। नौकरानी उनको सौ वर्ष जीने का आशीर्वाद देकर चली गई। कर्वे ने सौ वर्ष स्वस्थ पूर्वक जीवन बिताने पर शताब्दी महोत्सव मनाया। किसी के पूछने पर जीने का रहस्य नौकरानी का आशीर्वाद बताया। उन्होंने स्पष्ट बताया कि मैं नौकरानी के हार्दिक आशीर्वाद से ही सौ वर्ष पूर्ण कर पाया हूँ। इस प्रकार अनेक दृष्टान्त आज भी देखने या पढ़ने को मिलते हैं।

(५) अतिथि सत्कार— पर्वतिथि या अपर्वतिथि का भेद देखे बिना जो व्यक्ति सदा सत्प्रवृत्ति करते है उन्हें अतिथि कहते है। सर्वत्यागी मुनि भी

अतिथि कहलाते है। मुनि भाव में सदा या अल्प कालीन रहने वाले श्रावक भी अतिथि कहलाते है।

जो व्यक्ति निन्दनीय बाह्य प्रवृत्ति से मुक्त है, अवर्णवाद से दूर रहते है उन्हें साधु कहते है।

धर्म, अर्थ, काम पुरुषार्थ में जिसकी शारीरिक व मानसिक शक्ति क्षीण हो गई है, उन्हें दीन कहते है। भिक्षक, याचक, अपंग, अपाहिज दीन कहलाते है।

मुनि की भक्ति होती है, साधु की सेवा होती है, दीन पर दया किया जाता है। सर्वोत्तम अतिथि मुनि है मध्यम अतिथि साधु है, और जघन्य अतिथि दीनजन है।

दयाहीन व्यक्ति जैन नहीं बन सकते है।

अपनी-अपनी योग्यतानुसार तीनों प्रकार के पात्र की भक्ति, सेवा, दया हम सभी को करना चाहिए।

मुनि और साधु के ऊपर दया नहीं की जाती क्यों कि वे दया के पात्र नहीं है। इसी प्रकार दीन की भक्ति भी नहीं होती है क्योंकि वे इसके योग्य पात्र नहीं है। इसीलिए दीनपर अनुकम्पा करने के लिए कहा गया है।

महापुरुषों ने स्वयं मुनि की भक्ति, साधु की सेवा, दीनपर अनुकम्पा करके जगत को सन्मार्ग बताया है।

सद्व्यक्ति समुद्रव्रती होते है। समुद्र व्रत अर्थात् अपनी मर्यादा का उल्लंघन न करने वाले।

एक स्त्री बच्चे को लड्डू देने में स्नेहभाव,
पति को लड्डू देने में कामभाव,
स्वसुर को लड्डू देने में भक्तिभाव,
मुनि को लड्डू देने में धर्मभाव,
भिक्षुक को लड्डू देने में दयाभाव रखती है।

बच्चे को लड्डू देने में धर्मभाव या मुनि को लड्डू देने में कामभाव नहीं रखती है या रखना अनुचित है।

भारत भूमि में अतिथि सत्कार की अपूर्व महिमा है। यहाँ पर शत्रु भी अतिथि के रूप में आने पर उनका सत्कार करने का विधान है।

अतिथि सत्कार के कुछ दृष्टान्त—

(क) संत एकनाथ अतिथि सत्कार के लिए अपना सर्वस्व लगा दिये थे।

(ख) कवि माघ, महान्दानी थे। अपने धनी पिता का सम्पूर्ण धन दान देकर समाप्त कर दिया। दुःखी व्यक्ति कुछ पाने की कामना से किसी भी समय उनके पास आ जाते थे। एक दिन एक याचक कुछ पाने की कामना से उनके घर आया। पर दुर्भाग्य से उस समय कवि माघ के पास उसको देने के लिये कुछ भी नहीं था। दुःखी याचक निराश होकर चला गया। कवि के मन में बड़ा दुःख हुआ, मन ही मन सोचने लगे, धिक्कार हो मेरे जीवन को, अब इस संसार में मुझे जीने का कोई अधिकार नहीं है। याचक खाली हाथ निकलने से पूर्व शरीर से मेरा प्राण निकल जाना चाहिए और वास्तविक में वही हुआ। याचक को कुछ न दे पाने का दुःख असह्य हो गया, कवि की हृदयगति रुक गई।

(ग) वस्तुपाल हमेशा ५०० मुनि की सेवा भक्ति करते थे।

(घ) आभू सेठ की प्रतिज्ञा थी कि घर पर आये हुए साधर्मिक को भोज कराये बिना स्वयं भोजन नहीं करते थे।

(ङ) गुर्जरेश्वर परमार्हत् कलिकाल सर्वज्ञ के परम भक्त कुमारपाल महाराजा साधर्मिक भक्ति में १४ क्रोड़ सोना मोहर खर्च किये थे।

इस प्रकार अनेक उदाहरण भारतीय वांङ्मय में आज भी जीवन्त है।

पाँच उचित व्यवहार —

(१) उचित विवाह (२) उचित देश

(३) उचित व्यय (४) उचित घर

(५) उचित वेष।

औचित्य पालन सद्गृहस्थ का प्रथम कर्तव्य है। तीर्थंकर परमात्मा भी अपने औचित्य का उल्लंघन नहीं करते है। भारत भूमि की आर्य संस्कृति मोक्षदायक कहलाती है। यहाँ पर प्रत्येक की कामना मोक्ष की प्राप्ति होती है। अपने सामान्य स्वार्थ के लिए इन ऋषिदत्त गुणों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

(१) उचित विवाह— भिन्न गोत्र और समकुल में विवाह को उचित विवाह कहते है।

जिनके सातवीं पीढ़ी में पिता एक है वे सगोत्री कहलाते है। समगोत्री में विवाह निषेध है। सराक जाति में प्राचीनकाल से एक गोत्र में विवाह का विधान है। क्यों सराक जाति में अधिकांश आदिदेव गोत्रीय है। इस सराक जाति में एक गोत्र में तो विवाह होता है परन्तु सात पीढ़ी अवश्य टाला जाता है। समगोत्र में रक्त सम होने से संतान सांकर्य, हीनसत्वशील होता है। क्षेत्र के दूरत्व न होने पर भी वहीं स्थिति होती है। उक्त नियम का पालन करने से संतान सात्वशील, बलिष्ठ और प्रभावशाली होता है।

गोत्र अलग हो पर कुल, शील, व्यसन, रुची, धर्मभावना समान होना चाहिए। एक का उच्च और एक का नीच हो, विचार भेद हो तो जीवन में स्थिरता नहीं आती है। समान विचार से मित्रता सफल होती है। विषम विचार, स्वभाव के कारण वैमनस्यता बढ़ जाती है। एक की रुचि धार्मिकता में हो तो वह मंदिर जाने की इच्छा रखेगा और अन्य की रुचि भौतिकता में हो तो सिनेमा देखने की इच्छा रखेगा। परिणाम स्वरूप परस्पर संघर्ष बढ़ जायेगा। स्त्री की मर्यादा हमेशा बनी रहनी चाहिये। मर्यादा जीवन रूपी गाड़ी का ब्रेक है।

(२) उचित देश— उचित या अनुकूल देश जहाँ पर– अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष पुरुषार्थ नियंत्रित करने में बाधा नहीं करें।

—स्व-पर राजा का भय न हो।

—बारम्बार युद्ध का भय न हो।

—बारम्बार अतिवृष्टि या अनावृष्टि नही होती हो।

—पशु-पक्षी का उपद्रव न हो।

—प्रजा परम्पर विरोधी न हो।

—सद्‌गुरु का योग मिलता हो।

—सद्‌धर्म देव मंदिर का योग मिलता हो।

—सहधर्मी का सहवास हो। ऐसे देश में बसना चाहिए।

(३) उचित घर— निम्नोक्त नियम युक्त गृह में रहे या ऐसे अनुकूल युक्त स्थान में घर बनावे जहाँ—

—प्रतिवेशी सज्जन हो–

—मूलघर में हड्डी, या राख न हो।

—स्वादिष्ट शुद्ध जल सुलभ हो।
—मुख्य राजमार्ग में न हो।
—अति गुप्त स्थान में भी न हो।
—एक ही दिशा में एक द्वार वाला न हो।
—मुख्य द्वार में गाय आदि रखने का स्थान हो।
—दिन के दूसरे या तीसरे प्रहर में मंदिर के ध्वज की छाया न पड़ती हो।
—बीच में राज मार्ग हो तो इस छाया का दोष नहीं लगता है।
—घर में चित्रादि शिक्षापद हो।
—घर के किसी भी एक स्थान में इष्ट की स्थापना हो।

(४) उचित व्यय— आय के अनुरूप ही व्यय करना चाहिये। आय का एक भाग सत्कर्म में १० भाग भविष्यनिधि में अवश्य रखना चाहिए। अनुचित व्यय से समाज में अपमान सहना पड़ता है। चोरी करने की आदतें पड़ जाती है। धीरे-धीरे गलत रास्ता अपना लेता है।

(५) उचित वेष— हर व्यक्ति को अपनी शक्ति के अनुसार अर्थ, देश, काल, और प्रसंग के अनुरूप वस्त्र पहनना चाहिए। वस्त्र अन्य का मन खराब करे ऐसा नहीं होना चाहिए। वस्त्र भी व्यक्ति के मन में प्रभाव डालता है। धर्म शास्त्र में लिखा है कि धम्म रक्खइ वेसो धर्म की रक्षा वेश से होती है। भारतीय वेश में आज का भौतिक वैज्ञानिक भी सहमत है।

अयोग्य वेश विकार के साथ-साथ अनेक रोग का भी कारण है।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराज चरित्र

यह सुन कुमार ने उसे कहा-असुर ! देखो तुमने मुझे नींद से जगाकर तकलीफ पहुँचाई है। अतः तुम मेरे पैर के तलुओं को अपने हाथों से मलो जिससे मुझे कुछ आराम मिले। कुमार की गंभीर मुखमुद्रा और निर्भीकता को देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ राक्षस ने ज्यों ही कुमार के पैर छूने के लिए अपने हाथ बढ़ाये त्यों ही कुमार ने उसका आदर करते हुए उसे बड़े सद्‌भाव के साथ अपने पास शय्या पर बैठा लिया। परस्पर क्षमा याचना करके घुलमिलकर बातें करने लगे।

राक्षस ने कहा—कुमार! आपके इस वोरोचित उदार व्यवहार से मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। मैं आपकी क्या सेवा करूं? कुमार ने कहा—देव! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो आप इस प्राणी–हिंसा के पाप को छोड़कर, जीवों पर दया किया कीजिए। आपको भी परोपकारी होना चाहिये। इन रानियों का कैद तोड़ देना चाहिए। इस उजड़े नगर को फिर से बसा देना चाहिए।

राक्षस ने इन सब बातों को बड़े प्रेम से स्वीकार किया और कुमार को अपने धर्म-गुरु के समान मानता हुआ प्रसन्नता से कहने लगा–हे महापुरुष! आप इस कुण्डलपुर के स्वामी होकर, इसका उद्धार कीजिये। आपके पुण्य-प्रताप से यह देश और नगर पुनः हराभरा, धन-जन से परिपूर्ण तथा समृद्धिशाली बन सकेगा, दूसरे से नहीं। अतः आप मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार कीजिये।

इसके बाद राक्षस कुमार को लेकर रानियों के पास गया और बोला- हे बहनों! मेरे और आपके सौभाग्य से ही ये कोई पुण्यात्मा यहां आये हैं। मैंने यहां का राज्य इनको सौंप दिया है। मुझे आशा है, कि ये इस राज्य का उद्धार करने में अवश्य ही समर्थ होंगे। आज से आप लोग भी मेरी धर्म बहने और माताएं हो चुकी हैं। आप लोगों को मैंने जो कुछ अपशब्द कहे, एवं आपके साथ जो कुछ दुर्व्यवहार किया उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। इस बात को सुनकर रानियों को बड़ी भारी प्रसन्नता हुई और कुमार को राजा रूप में एवं राक्षस को अपना धर्म-बन्धु रूप से स्वीकार किया।

उस समय कुमार ने उन रानियों से आदर के साथ पूछा—माताएं! क्या आप लोगों के वंश में ऐसा पुरुष नहीं है, जो राज्य का उत्तराधिकारी बन सके। तब रानी गुणवती ने कहा-अरे परोपकारी कुमार! हमारा वंश तो समाप्त ही हो चुका है, मैं चाहती हूँ कि मेरी चन्द्रमुखी नाम की इस कन्या के साथ विवाह सम्बन्ध जोड़कर आप ही हमारे इस राज्य के स्वामी हो जायँ ताकि हमारी सारी उलझनें दूर हो जाएँ। यह प्रस्ताव उपस्थित हुआ देख कुमार ने कहा माताएं! अज्ञातकुलशील वाले मुझे, कन्या और राज्य जैसी महत्वपूर्ण वस्तुओं को प्रदान करने का साहस आप कैसे कर रहीं हैं?

इस पर रानियों ने और उस राक्षस ने कहा—नरोत्तम! तेजस्वी अपने तेज से ही पूजे जाते हैं। महा-पुरुषों के अलौकिक गुण कर्म ही उनके ऊंचे कुल एवं सत्यशील के परिचायक होते हैं। अतः हे कुमार निःसंकोच होकर हमारी इच्छाओं को पूर्ण कीजियें।

अनिषिद्धं स्वीकृतं के न्याय से अपनी दैविक शक्ति से धन, जन, सेना, हाथी, घोड़े आदि सभी आवश्यक वस्तुओं को एकत्रित करके कुमार को कुण्डलपुर का राज्य दे दिया, और उसके बाद बड़ी धूमधाम से कुमारी चन्द्रमुखी का विवाह भी उसके साथ कर दिया।

राजा हो जाने पर कुमार ने अपनी नाम-मुद्रा दिखला दी और अपना सम्पूर्ण परिचय दे दिया। कुमार को महाराज प्रतापसिंह का सुपुत्र जानकर सबको बड़ी खुशी हुई। रानियों ने उसे अपने जामाता के रूप में पाकर अपने को धन्य माना।

एक रोज राक्षस ने कुमार श्रीचन्द्र से कहा—राजन्! इस नगर के भूतपूर्व राजा द्वारा पूर्वजन्म में मैं धोखे से मारा गया था। मेरी मृत्यु का कारण वज्रखर नाम का एक चोर था। मैंने उसका पता लगाकर उसको पहले ही मार दिया है। कुण्डलगिरि के मुख्य शिखर की गुफा में उसका गुप्त कोष रत्नसुवर्णादि से परिपूर्ण सुरक्षित पड़ा है। आप वहां चलकर उसे ग्रहण कीजिए।

राक्षस के कथनानुसार राजा श्रीचन्द्र ने वहां जाकर उस कोष को अपने अधिकार में कर लिया। वहाँ स्वर्ग से भी बढ़कर सुन्दर चन्द्रपुर नाम का एक विशाल नगर बसाया। उस नगर के मध्य में एक भव्य यक्ष-मंदिर बनवा कर उसमें चोर की छाती पर खड़े उस राक्षस को नरवाहन यक्ष के

नाम से प्रसिद्ध किया। बाद में कुमार कुण्डलपुर लौट-आया और राज्य की सुव्यवस्था करने में लग गया।

जिन्दगी इन्सान का संग्राम है,
आदमी उठता रहे गिरता रहे।
सर पकड़कर बैठ जाना पाप है,
आदमी चलता रहे फिरता रहे।।

संसार में जन्म लेकर कर्म तो निरन्तर करते ही रहना चाहिये। अकर्मण्य और प्रमादी होकर पड़े रहना एक प्रकार का पाप है। कर्म करते समय यदि कर्मफलों का विचार होता रहे तो स्वभाव से ही बुरे कर्म हमारे द्वारा न होंगे। इसी बात को विपाक-विचय नाम से धर्म-ध्यान कहा गया है। इस प्रकार के धर्म ध्यान से ऐहिक सुखों की प्राप्ति तो होती ही है पर मोक्ष की भी साधना सहज-भाव से हो जाती है। महापुरुष इसी लिए कर्मठ होते हुए विवेक के साथ प्रत्येक कार्य का संपादन करते रहते हैं। सच्चे वीरों का रणभूमि में हृदय की दुर्बलता से कोई सम्बन्ध नहीं रहा करते । वे तो वीरता से कर्त्तव्य–मार्ग में अग्रसर होते ही जाते हैं।

चरित्र नायक श्रीचन्द्र कुमार बैठनेवाले प्रमादी आदमी नहीं थे। कुण्डलपुर की राज्य–व्यवस्था ठीक करके अपनी सास, पत्नी, मन्त्री, सेनापति, और अधिकारियों को अपना-अपना अधिकार संभला कर, सबको ठीक ढंग से समझा बुझा कर, देश में अपनी आज्ञा प्रचारित कर, पुनः कुण्डलपुर में लौट आने की प्रतिज्ञा करके सायंकाल के समय अपने कार्पटिक–बाबाजी के वेश को धारण कर वहां से चल दिये। चलते-चलते महेन्द्रपुर पहुँच गये। रात हो जाने कारण नगर के बाहर ही किसी शून्य-देव-मंदिर में निर्भय रूप से सो गये।

आधी रात का समय था। लोहखुर नाम का एक चोर अवस्वापिनी आदि विद्याओं के योग से नगर में चोरी करके काफी धन की गठरी उठाकर वहां आया उसने सोये हुए कुमार को देखा उन्हें उठाकर बोला–अरे बाबा! तू मेरा बोझा उठाकर मेरे साथ चल। मैं तुझे निहार कर दूंगा। चोर की अजीब बात के सुनकर कुतूहल–प्रिय कुमार ने उसकी बात मंजूर करली। उसके कथनानुसार उस बोझे को उठाकर उसके साथ-साथ चला। चलते-चलते दोनों एक पहाड़ की बड़ी भारी खोह के अन्दर घुसे, और थोड़ी ही दूर जाकर एक भोंयरे में उतर गये।

उस भूमि–गृह में दीपक जगमगा रहे थे। स्थान-स्थान पर रत्न जटिल पलंग, कुर्सियां, आराम-कुर्सियां और चौकियां पड़ी थी। जगह-जगह झूले पड़े हुए थे। भिन्न-भिन्न प्रकार के खेलों के सामान तथा अनेक तरह के मनोरंजन के साधन वहाँ पर विद्यमान थे। ढेर-के ढेर-रत्न वहाँ पर पड़े हुए थे। मनमोहक वस्तुओं से स्थान सुसज्जित हो रहा था। जिसके आगे राजमहल की शोभा भी फीकी लग रही थी। जिसे देख-देख कर कुमार चकित हो रहा था। एक स्थान पर रुक कर चोर ने भार को नीचे उतारने का आदेश दिया।•कुमार ने बोझा अपने सर से उतार कर रख दिया, और वहीं बैठकर विश्राम करने लगा।

कुमार वहाँ आराम कर ही रहा था कि एक सुन्दर रमणी वहाँ आई और चोर को प्रणाम किया। यह देखकर कुमार बहुत ही विस्मित हुआ।

चोर ने कहा–पुत्री! तुम इस मेहमान का आदर सत्कार करो। यह सुनकर वह रमणी कुमार को एक दूसरे कमरे में ले गई और बोली स्वामिन्! आइयें आप स्नान कीजियें। भोजन कीजियें और इस बिछे हुए पलंग पर आराम लीजियें। अन्य स्त्रियोचित सेवा के लिये मैं आप की दासी तैयार हूँ। आप हमारे यहां पधारे हैं। हमारा अहोभाग्य है। आप के दर्शन मात्र से मेरा मन आपके आधीन हो गया है।

उस रमणी की इस प्रकार की मीठी और चिकनी चुपड़ी बातों को सुनकर कुमार को शक हो गया कि यहां कुछ दाल में काला है। अतः मुझे बड़ी सावधानी से रहना चाहिए। थोड़ी ही देर में कुमार ने सब बातें विचार ली। क्या करना चाहिये इसका भी निर्धारण कर लिया। एकान्त मौका पाकर कुमार ने उस रमणी को पास पड़ी एक रेशम की रस्सी से बांध दिया, और उसका का चुट्टा पकड़कर क्रोध का अभिनय करते हुए पूछा कि बता तू कौन है? यह आदमी कौन है? तुम्हारा क्या व्यवसाय है? सच सच बता दे। अन्यथा आज तेरी कुशल नहीं है।

कुमार की इस डांट डपट से भयभीत हुई उस रमणी ने कांपते-कापते कहना शुरु किया अरे बाबा! यह आदमी लोहखुर नामका चोर है। यह मेरा बाप है। मैं इसकी बेटी हूँ। चोरी का हमारा धंधा है। हमारे यहां आये आदमी को मैं अपनी चतुराई से इस गढ्ढे में ढकेल कर जान ले लेती हूँ। यह मेरे नित्य का काम है।

उस स्त्री के द्वारा सच सच बता देने पर कुमार ने उसे छोड़ दिया। बाद में वह चोर के पास पहुँचकर उसे ऐसा धमकाया कि चोर मारे डरके थर-थर कांपने लगा। चोर की इस हालत को देख दयालु कुमार ने कहा– देखो! अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है अगर तुम अपने जीवन का उद्धार चाहते हो तो इस चौर्य-कर्म को छोड़ दो और कहीं अन्यत्र जाकर बुरे कर्मों के त्याग से शनैः शनैः अच्छे कर्मों को करते हुए संसार में यश के भागी बनो।

कुमार के हितैषी उपदेश को सुनकर चोर को चौर्य वृत्तिं से घृणा हो गई और अपनी पुत्री को लेकर वह कहीं अन्यत्र चला गया। चोर के चले जाने पर कुमार ने उस खोह के मुख-द्वार पर एक बड़ा भारी शिला खण्ड रख दिया। उसमें जाने आने का रास्ता ही रोक दिया।

उस रात्रि में कुमार श्रीचन्द्र किसी पेड़ कें नीचे पहुंचकर सो गया। सुख से नींद ली। बड़े सबेरे उठ गया, और प्रातःकालीन नित्य-कर्मों से निवृत्त हो श्री अरिहंत भगवान को नमस्कार करके अच्छे लग्न में श्रीमहेन्द्रपुर नगर में प्रविष्ट हो गया।

नगर-लीला देखते हुए कुमार किसी सेठ की दुकान पर जाकर खड़ा ही था कि एक ढिंढोरे की आवाज सुनाई दी। उसने सेठ से पूछा—सेठजी! यह क्या मामला है? तब सेठ ने कुमार को सारी कथा कह सुनाई, और कहा कि इस तरह ढिंढोरा पीटते-पीटते लगभग छह महीने हो गये हैं।

इतने में ढिंढोरा पीटने वालों ने कहा भाइयों! सुनो, जो कोई भी व्यक्ति हमारी राजकन्या के नेत्रों को स्वस्थ कर देगा तो राजाजी उसे अपना आधाराज्य देंगे, और उस राज कन्या का उससे विवाह देंगे। यह सुनते ही कुमार ने शीघ्रता से उस पटह को छू लिया।

ढिंढोरा पीटने वालों ने जाकर राजा को इस बात की सूचना दी। राजा ने बड़ी प्रसन्नता से उस कार्पटिकवेषधारी कुमार को छत्र-चामर और हाथी आदि भेजकर बड़ी सजधज और मान मर्यादा के साथ बुलाया। कुमार बड़े ठाठ से राज-सभा में पहुँचा। दरबार में पहुँचकर राजा को विजयी भव-यशस्वी भव—का आशीर्वाद दिया। बाद में राजा द्वारा दिये गये आसन पर बड़ी नम्रता के साथ वह बैठ गया।

राजा द्वारा परिचय पूछे जाने पर कुमार ने कहा महाराज! कुशस्थल का रहने वाला एक नेत्र-वैद्य हूँ। आज आपके दर्शन से मैं अपने आपको कृतार्थ मानता हूँ।

राजाने कहा–हे महाभाग! आज तुम मेरे और कन्या के अहोभाग्य से, दैव योग से इधर आ निकले हो अतः हमारे उस कार्य को पूरा करो। उसके बदले में जो कुछ देने का है, उसे ग्रहण करो।

राजा के ऐसा कहने पर कुमार ने कहा राजन्! आप का फरमाना ठीक है। गुरु कृपा से मुझे मंत्र और औषधि आदि का अच्छा अभ्यास है। आप उस कन्या को दिखाइयें जिससे मैं उनका योग्य उपचार करूं।

राजा के आदेश से कन्या को वहां लाया गया। उसे देखकर कुमार ने बड़ा दुःख प्रगट किया कि अरे! कितना सुन्दर रूप और कैसा बुरा यह अन्धापन है। उसने उस सभा में ही पानी के योग से कुछ जमीन को पवित्र बनाया। उस स्थान के चारों ओर कनात लगवा दी आंखों की चिकित्सा करने की इच्छा से कुमार ने कन्या को पर्दे के भीतर बिठा दी। स्नान आदि करके उसने वहां सारी पूजा की सामग्री जमा दी। उस कन्या की आंखों पर औषधि-रस का लेप कर दिया। कुछ समय तक पूजा धूप-दीप आदि करके नवकार मंत्र का जाप आदि किया।

कुछ समय बीतने पर औषधि के प्रभाव से राजकुमारी की आंखें कमल के समान खिल गई और उसने इंद्र के समान तेजस्वी कुमार को विधिपूर्वक देव-पूजा करत हुए देखा।

कुमार ने भी अरिहंत भगवान को नमस्कार करते हुए उस कुमारी से पूछा- राजकुमारी! क्या तुझे अब ठीक दिखाई देता है? जरा मेरी अंगूठी पर लिखे हुए नाम अक्षरों को तो पढ़ लेना।

कुमार के ऐसा कहने पर उस राजकन्या ने अंगूठी पर लिखे हुए श्रीचन्द्रकुमार इस नाम के पढ़ा। पढ़कर वह बहुत प्रसन्न हुई, और प्रशंसा करने लगी। हे नाथ! हे प्राणजीवन! पहले भी पिताने मुझे आपको दी थी और अब आज भी मैं आपको वरण कर रही हूँ। अंगूठी से आपके नामका और आश्चर्यकारी गुणों से आपके कुल का मुझे पता लग गया है।

इसके अनन्तर वह कुमार अपने दिव्य वेष को छिपा कर फिर उन्ही गैरिक वस्त्रों को धारण करके एवं मुंह और बालों पर भस्म रमाये राजा के

पास गया। सुलोचना भी उसके पीछे-पीछे वहां आई। यथार्थ नाम वाली सुलोचना को देखकर राजा ने प्रसन्न होकर उसको उसको अपनी गोदी में उठा लिया।

यह देख सभी अचरज में डूब गये और राजा तो इतना प्रसन्न हुआ कि मानों उसने कोई खोई हुई निधि पाई हो। कन्या के स्वस्थ होने का उत्सव पुत्र जन्म के उत्सव से भी बढ़कर मनाया गया। बाद में राजा ने उस सुलोचना को अन्तःपुर में भेज दिया और उसको दृष्टियुक्त देखकर सभी रानियां प्रसन्न हुई।

इधर राजा ने उस कार्पटिक को अपने महल में बड़े आदर से ठहराया और रसोई आदि के लिये बहुत से नौकर रख छोड़े। तत्पश्चात् राजा ने राजसभा में मंत्रियों के साथ विचार विमर्श किया कि यह अज्ञात-कुल-शील व्यक्ति है। इसको कन्या देनी है, सो क्या करना चाहिये? सलाह में कुल पूछने की ठहरी, और राजा की आज्ञा से एक मंत्री ने उसका कुल पूछ ही लिया।

कुमार ने हंसकर उत्तर दिया, आपके विचार ठीक ही हैं कि आप पानी पीकर घर पूछते हो तो भी हे मंत्रिवर्य! सुनो, कुशस्थलपुर में लक्ष्मीदत्त नाम का एक सेठ रहता है। मैं उसीका व्यसनी दुराग्रही और जुआरी पुत्र हूँ। मैं पिता के छांने घर से धन चुराकर इधर-उधर व्यय कर देता था। इससे पिता ने रुष्ट होकर मुझे घर से निकाल दिया। घर से निकाले जाने पर मेरा आचरण और चरित्र और भी ज्यादा भ्रष्ट हो गया है। जुआ आदि दुर्व्यसनों में फंस जाने पर प्राणी को दुःख के सिवाय और मिल ही क्या सकता है?

मैं इधर उधर दुःखी अवस्था में भटक ही रहा था कि मेरी अचानक एक सिद्ध पुरुष से भेंट हो गई, मैं उसकी सेवा में बहुत दिनों तक रहा। उसने मेरी सेवा से प्रसन्न होकर मुझे यह मंत्र दिया। मैं उस सिद्ध पुरुष को छोड़कर इधर चला आया हूँ क्योंकि जुआ खेलने की उत्कट इच्छा ने मुझे वहां टिकने नहीं दिया। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि बिना धन के जुआ हो नहीं सकता अतः मैंने धन प्राप्ति की ही आशा से इस ढिंढोरे को स्पर्श किया था।

क्रमशः

खाते-खाते कैवल्य ज्ञान

जैनाचार्य के साथ कई जैन मुनि जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में जुटे हुए थे। जिसमें से कई मुनि बड़े त्यागी और तपस्वी थे। इन मुनिवरों में एक कुरगडु मुनि थे। जिनसे तपस्या नहीं होती थी और वे चावल खाने के बड़े शौकीन थे। बिना चावल खाये उनको चैन नहीं होता था। चावल भी वे अधिक मात्रा में खाया करते थे।

जैनाचार्य की पावन निश्रा में महापर्व पर्यूषण का आयोजन हो रहा था। जिसमें कई साधु साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं ने खूब जोरों की तपस्या आरम्भ की। इस पर्व पर आचार्य सहित कई मुनिवरों ने लम्बी उपवास तपस्या की। जिसमें से चार मुनिवरों का मासक्षमण की तपस्या चल रही थी। इस पर्व के क्षमापना दिन अर्थात् संवत्सरी के दिन तो करीब-करीब सभी जैन मुनिवरों की तपस्या थी लेकिन कुरगडु ने इस दिन भी उपवास नहीं किया।

कुरगडु के संवत्सरी के दिन उपवास नहीं होने पर उसने आचार्य से गोचरी लाने की आज्ञा मांगी। आचार्य कुरगडु की आदत को जानते थे और इन्होंने गोचरी लाने की आज्ञा प्रदान कर दी। लेकिन अन्य मुनिवरों ने जिसमें से चार मुनिवर जिनके मासक्षमण उपवास की तपस्या चल रही थी उन्होंने कुरगडु को संवत्सरी के दिन गोचरी लाने एवं खाने की जमकर आलोचना की।

कुरगडु गोचरी में मात्र अपने खाने के लिये चावल भर लाया और आचार्य के सामने रखते हुए गोचरी वापरने का आदेश लिया। कुरगडु के गोचरी वापरने को अन्य मुनि धिक्कारने लगे।

आचार्य की आज्ञा प्राप्त कर कुरगडु गोचरी वापरने (खाने) के लिये बैठ गया। जैसे ही उसने गोचरी का अर्थात् चावल के कुछ दाने मुंह में रखने को था उसके दिल में भाव उत्पन्न हुए कि–मैं कितना अभागा हूं जो महापर्व

पर्यूषण के संवत्सरी के दिन भी उपवास नहीं कर सका। धन्य है वे मुनि जो एक-एक मास का उपवास कर अपने कर्मों की निर्जरा कर रहे है।

पश्‍चाताप की चरम सीमा पर कुरगडु चिंतन कर रहा था और धीरे-धीरे गोचरी में आये चावल खा रहा था। कुरगडु के इस आचरण को देखकर एक मास की तपस्या करने वालों को उसके प्रति जोरों की ग्लानि होने लगी और गोचरी में इन मुनियों ने थूकना शुरू कर दिया।

कुरगडु को इस बात का तनिक भी भान नहीं हो रहा था कि उसकी गोचरी में किसी ने थूका है। वह तो गोचरी अर्थात् चावल खानें में मस्त तो था परन्तु अपनी आत्मा को धिक्कार रहा था। मुनि बनकर तपस्या उपवास नहीं कर सका। ऐसे मुनि बनने से क्या लाभ। मैं शासन की सेवा नहीं कर पाऊंगा अपने अर्न्तमन से वह तपस्या उपवास नहीं करने के लिये पश्चाताप कर रहा था कि उसे खाते-खाते केवल्य ज्ञान हो गया।

कुरगडु मुनि को केवल्य ज्ञान की प्राप्ति होने के साथ आकाश में देव दुंदभि बज उठी। चारों ओर मुनि के केवल्यज्ञान की प्राप्ति पर जय-जयकार होने लगा। कुरगडु मुनि को केवल्यज्ञान होने पर एक मास के उपवास की तपस्या करने वाले चारों मुनिवरों के दिल में भी कुरगडु के साथ किये दुर्व्यवहार पर अर्न्तमन से पश्चाताप करने लग गये। पश्चाताप के साथ-साथ इन मुनिवरों ने सोचा कि हमने तपस्या अवश्य की लेकिन हमारा मन अस्थिर रहा है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिये। मास क्षमण की तपस्या करने वाले चारों मुनि पश्चाताप में इतने गहरे खो गये कि इनके पास क्या हो रहा है इसका भी भान नहीं हुआ। शुद्ध मन, वचन एवं काया से पश्चाताप करने वाले इन मुनिवरों को भी केवल्य ज्ञान की प्राप्ति हो गई।

(भूरचन्द जैन)

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Ciive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc..
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700.007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intak and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

—शरीर और आत्मा—

जैसे तिलों में तेल है, पुष्पों में सुगन्ध है वैसे ही शरीर में आत्मा है। जैसे पिंजरे में रहा हुआ पक्षी पिंजरे से जुदा है; वस्त्र धारण करने वाला वस्त्रों से जुदा है वैसे ही आत्मा शरीर से जुदा है।

शरीर धारी आत्माओं में संकोच विकाश का गुण है। इससे यह नहीं कहा जा सकता है कि आत्मा इतना बड़ा अथवा इतना छोटा है। जीव जिस देह में रहता है उसी के प्रमाण का कहलाता है। जैसे शरीर बढ़ता है वैसे ही आत्म प्रदेश भी विकसित होते रहते हैं और शरीर के भागों में व्याप्त हो जाते हैं। शरीर दुर्बल होने पर, हाथ पैर कट जाने पर जीव के प्रदेश संकुचित हो जाते हैं।

दीपक का प्रकाश खुला रहता है तो वह सारे घर में फैलता है मगर उस पर बर्तन ढक दिया जाता है तो प्रकाश संकुचित होकर बर्तन तक ही रह जाता है। इसी तरह हाथी के शरीर में रहने वाला जीव हाथी प्रमाण के प्रदेश रोककर रहता है और चींटी के शरीर में रहने वाला जीव चींटी के शरीर प्रमाण प्रदेश रोकता है।

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

M.M. & P.O./W.B./R.N.P.–45/2003
VoL. XXVII. NO. 8. TITTHAYARA November 2003
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225